INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMIC SOCIAL SCIENCE AND MANAGEMENT LAW
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN: 3070-0558
VOL.7, NO.1(1) (2026)

"नागपुर शहर की घर कामगार महिलाएँ एवं उनके मालिकों के बीच संबंधों पर एक अध्ययन"

शोधकर्ता
सौ. जया अरविंद बैस
(एम. कॉम., एम.फिल., बी.एड.)

मार्गदर्शक
डॉ. लक्ष्मण गायकवाड
(एम कॉम., एम. फिल., पीएचडी.)

सारांश

यह शोध पत्र नागपुर शहर की घरेलू कामगार महिलाओं और उनके नियोक्ताओं (मालिकों) के बीच संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य इन संबंधों की प्रकृति, कार्यस्थल की परिस्थितियाँ, आर्थिक और सामाजिक प्रभाव, तथा संभावित समस्याओं को समझना है। शोध में मुख्य रूप से घरेलू कामगारों की कार्य स्थितियाँ, वेतन, सम्मान और शोषण के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

कीवर्ड्स: घरेलू महिला कामगार, घरेलू महिला कामगार एवं नियोक्ता से संबंध , समाज की चुनौतियां।

परिचय

भारत में घरेलू कामगार महिलाएँ समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये महिलाएँ घरों में सफाई, खाना बनाना, बच्चों की देखभाल और अन्य कार्यों में सहायता करती हैं। हालांकि, इनके काम को अक्सर अनौपचारिक और असंगठित क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, जिससे

इन्हें कानूनी सुरक्षा और उचित वेतन नहीं मिलता। नागपुर जैसे शहरी क्षेत्रों में घरेलू कामगार महिलाओं और उनके मालिकों के संबंधों में कई पहलू होते हैं - कुछ मामलों में यह संबंध सहयोग और आपसी सम्मान पर आधारित होता है, तो कुछ मामलों में इसमें असमानता और शोषण की झलक मिलती है।

साहित्य पुनरावलोकन

ILO, 2018: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन बताते हैं कि घरेलू कामगार, विशेष रूप से महिलाएँ, असंगठित क्षेत्र का हिस्सा होती हैं और उन्हें सामाजिक सुरक्षा का अभाव रहता है।

भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार, लगभग 2.6 मिलियन महिलाएँ घरेलू कार्यों में संलग्न हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश को श्रम कानूनों का लाभ नहीं मिलता।

टंडन (2015): के अध्ययन के अनुसार, मालिकों की मानसिकता और व्यवहार में शहरी क्षेत्रों में घरेलू कामगारों को निम्न आर्थिक वर्ग का माना जाता है, जिससे उनके प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है।

नागपुर पर केंद्रित शर्मा (2020): के शोध से पता चलता है कि लगभग 30% मालिक अपने कामगारों के प्रति सहानुभूति रखते हैं, जबकि 50% केवल औपचारिक व्यवहार करते हैं और 20% शोषणकारी रवैया अपनाते हैं।

राय (2019): के अनुसार, घरेलू कामगारों को प्रतिदिन 10-12 घंटे काम करना पड़ता है, लेकिन उनकी मजदूरी न्यूनतम वेतन मानकों से कम होती है।

शोध की पद्धति

इस संशोधन का उचित निष्कर्ष निकले इसलिये इस संशोधन पेपर मे घरेलू कामगार महिला और उनके मालिका के बीच के संबंध को विश्लेषण करणे हेतू 100 घरेलू कामगार महिला न्यादर्श का सर्वेक्षण किया गया है यह सर्वेक्षण यादृच्छिक न्यादर्श पद्धतीचे प्राथमिक डाटा प्राप्त किया है इस संशोधन पेपर को नागपूर शहर को विचार मे रखते हुए लिखा गया है

समस्या का कथन

नागपुर शहर में घरेलू कामगार महिलाओं और उनके मालिकों के बीच संबंध अक्सर असमान शक्ति संतुलन पर आधारित होते हैं। कई बार घरेलू कामगारों को शोषण, अपर्याप्त वेतन, अनुचित व्यवहार, अस्थिर रोजगार और अधिकारों की अनदेखी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वहीं, मालिकों की भी कुछ अपेक्षाएँ और चिंताएँ होती हैं, जैसे काम की गुणवत्ता और भरोसेमंद श्रमिक मिलना। यह शोध इन दोनों पक्षों की स्थिति को समझने और एक संतुलित परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा।

संबंधित विषय की आवश्यकता

1. घरेलू कामगार महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझनाः

घरेलू कामगार महिलाएँ समाज के कमजोर वर्ग से आती हैं और उन्हें कम वेतन, असुरक्षित नौकरी और श्रम अधिकारों की कमी का सामना करना पड़ता है। यह अध्ययन उनकी स्थिति को गहराई से समझने में मदद करेगा।

2. मालिकों और कामगारों के संबंधों की जटिलताओं को उजागर करनाः

मालिक और घरेलू कामगारों के बीच संबंध कई सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होते हैं। कभी-कभी ये संबंध सौहार्दपूर्ण होते हैं, तो कभी शोषण और असमानता देखी जाती है। इस विषय की जांच से इन पहलुओं को स्पष्ट किया जा सकेगा।

3. श्रम अधिकारों और नीतियों के प्रभाव का विश्लेषणः

घरेलू कामगारों के अधिकारों से संबंधित कई सरकारी और गैर-सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। यह अध्ययन मौजूदा नीतियों की प्रभावशीलता को समझने और संभावित सुधारों की ओर इशारा करने में सहायक होगा।

4. महिलाओं के सशक्तिकरण और श्रम सुधारों के लिए आधार तैयार करनाः

घरेलू कामगार महिलाओं की समस्याओं को पहचानकर उनके लिए बेहतर वेतन, काम करने की शर्तों में सुधार और सामाजिक सुरक्षा की जरूरतों को रेखांकित किया जा सकता है।

5. शहरी श्रम बाजार और घरेलू श्रमिकों के बीच संबंधों को संतुलित करनाः

नागपुर जैसे शहरों में घरेलू श्रमिकों की मांग और उनके अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करेगा, जिससे नीतिगत सुधारों में सहायता मिलेगी।

इस विषय पर शोध न केवल घरेलू कामगारों की स्थिति को बेहतर बनाने में योगदान देगा, बल्कि समाज और सरकार के लिए भी नीति निर्माण में सहायक होगा।

4. मालिकों की मानसिकता एवं व्यवहार

1. कुछ मालिक घरेलू कामगारों को परिवार का सदस्य मानते हैं और उनकी आर्थिक मदद करते हैं।

2. कई मालिक केवल श्रमिक के रूप में देखते हैं, जिससे कार्यस्थल पर भेदभाव होता है।

3. कामगारों को छुट्टी, बोनस, और चिकित्सा सहायता जैसे लाभ कम ही मिलते हैं।

5. प्रमुख समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

1. असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ: यौन उत्पीड़न, मानसिक उत्पीड़न, और अनुचित व्यवहार की घटनाएँ।

2. कम वेतन एवं आर्थिक शोषण: न्यूनतम मजदूरी अधिनियम लागू न होना।

3. कानूनी संरक्षण का अभाव: घरेलू कामगारों के अधिकारों के लिए ठोस कानूनों की कमी।

4. सामाजिक भेदभाव: जाति एवं वर्ग आधारित असमानता।

अध्ययन की सीमा

यह अध्ययन केवल नागपुर शहर के शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक सीमित रहेगा। इसमें मुख्य रूप से महिलाओं पर केंद्रित विश्लेषण किया जाएगा, क्योंकि घरेलू कामगारों में अधिकांश महिलाएँ होती हैं। अध्ययन में उन घरेलू कामगारों को शामिल किया जाएगा जो पूर्णकालिक या अंशकालिक रूप से घरों में कार्यरत हैं। यह अध्ययन कानूनी पहलुओं को छूते हुए सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगा

डेटा संग्रहण विधियाँ

प्राथमिक डेटा: इस अनुसंधान के लिए नागपुर शहर की घर कामगार महिलाओं से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करके साक्षात्कार (Interview) एवं प्रश्नावली (Survey) के आधार पर उनकी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीयक डेटा: द्वितीय आंकड़ा यह पहले हो चुके अनुसंधान के कुछ आंकड़ों का निरीक्षण करके इस अनुसंधान के लिए मासिक पत्रिका, समाचार पत्र, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की रिपोर्ट और अन्य शोध पत्र, इत्यादि की सहायता ले सकते हैं।

नमूना

नागपुर के विभिन्न आवासीय क्षेत्रों से 100 घरेलू कामगार महिलाओं और 30 नियोक्ताओं का चयन साक्षरता, आयु, कार्य अनुभव, वेतन आदि के आधार पर डेटा संकलन

3. घरेलू कामगार महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

1. शैक्षिक पृष्ठभूमि: अधिकांश महिलाएँ अशिक्षित या निम्न स्तर की शिक्षा प्राप्त होती हैं।

2. आर्थिक स्थिति: न्यूनतम वेतन और कोई सामाजिक सुरक्षा लाभ नहीं।

3. काम के घंटे और कार्यभार: औसतन 8-12 घंटे का कार्य, परंतु वेतन न्यूनतम।

4. नियोक्ताओं के साथ संबंध: कुछ महिलाएँ नियोक्ताओं से सम्मानजनक व्यवहार प्राप्त करती हैं, तो कुछ मामलों में भेदभाव और शोषण होता है।

घरेलू महिला कामगारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर डेटा संग्रह

इस अध्ययन में नागपुर शहर की 100 घरेलू महिला कामगारों से उनकी शिक्षा, मासिक आय, कार्य के घंटे, सामाजिक सुरक्षा और नौकरी की स्थिरता से संबंधित डेटा एकत्र किया गया।

संग्रहित डेटा (प्रतिशत में प्रतिक्रियाएँ)

1. शिक्षा स्तर

अनु.क्र.	शिक्षा स्तर	%
1	शिक्षित (10वीं या अधिक)	20%
2	माध्यमिक (5वीं - 9वीं)	30%
3	अशिक्षित (5वीं से कम या नहीं पढ़ीं)	50%

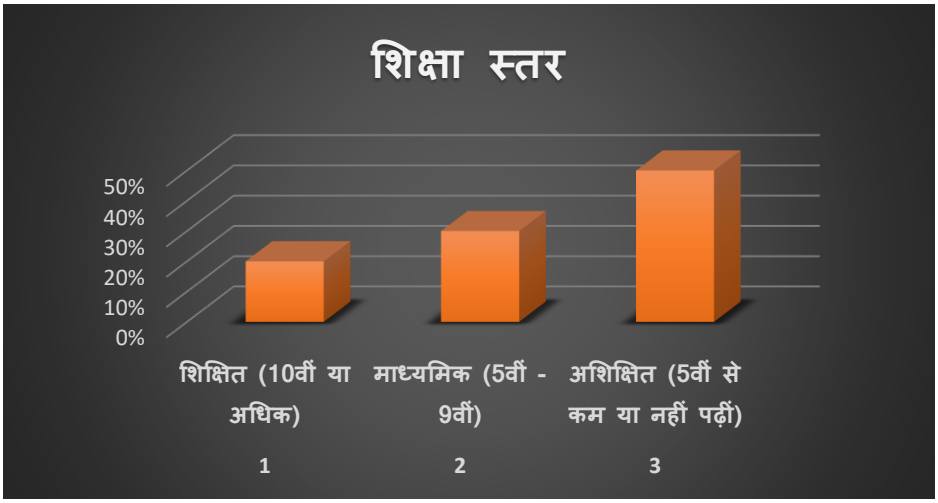

इस आंकड़े से स्पष्ट होता है कि घरेलू कामगार महिलाओं में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है। 50% महिलाएँ अशिक्षित हैं या उन्होंने 5वीं कक्षा से कम शिक्षा प्राप्त की है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि गरीबी, सामाजिक परिस्थितियाँ और काम की मजबूरी के कारण वे औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाईं। केवल 20% महिलाएँ 10वीं या उससे अधिक पढ़ी हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि घरेलू काम के क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं की भागीदारी कम है।

2. मासिक आय

अनु.क्र.	**मासिक आय**	**%**
1	₹7000 से अधिक	10%
2	₹5000 - ₹7000	25%
3	₹5000 से कम	65%

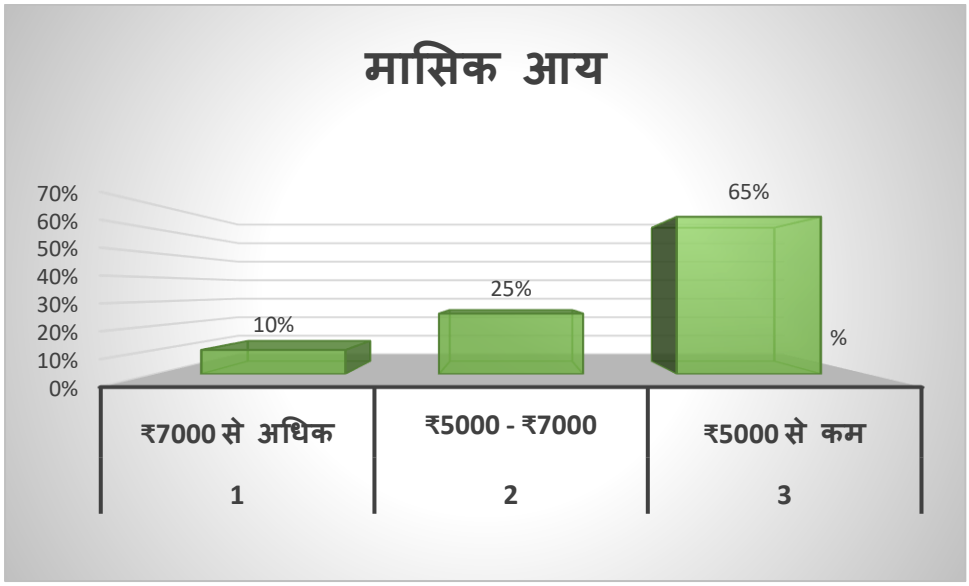

इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश घरेलू कामगार महिलाएँ (65%) ₹5000 से भी कम मासिक आय पर काम कर रही हैं, जो अत्यधिक निम्न आय है। 25% महिलाएँ ₹5000-₹7000 कमाती हैं, जबकि सिर्फ 10% महिलाएँ ₹7000 से अधिक कमा रही हैं। यह आय श्रेणी दर्शाती है कि घरेलू कामगार महिलाओं की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर है और उनका आर्थिक सशक्तिकरण सीमित है।

3. कार्य के घंटे

अनु.क्र.	**कार्य के घंटे**	**%**
1	8 घंटे से कम	30%
2	8-10 घंटे	40%

3	10 घंटे से अधिक	30%

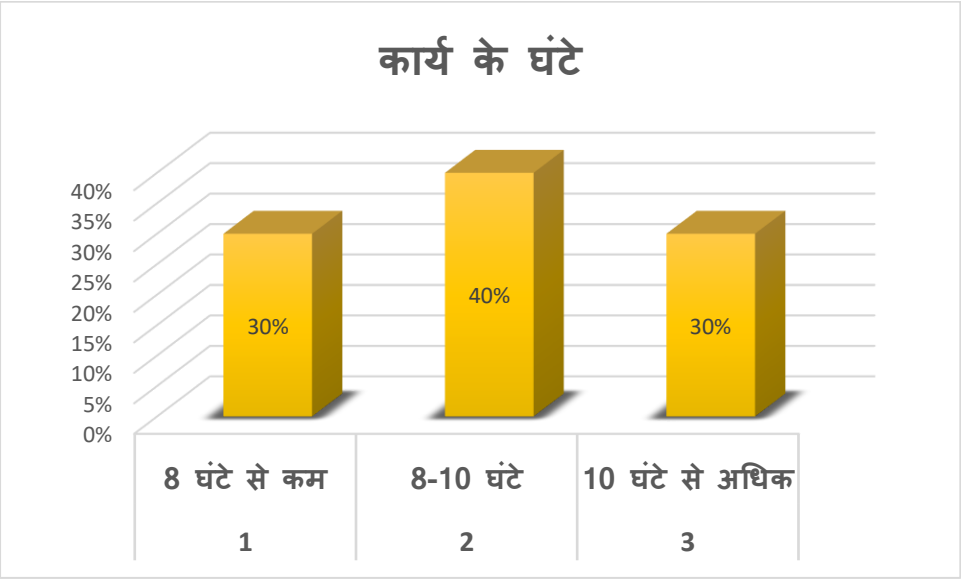

यह आँकड़ा दर्शाता है कि घरेलू कामगार महिलाओं के कार्य के घंटे विभिन्न श्रेणियों में विभाजित हैं। सर्वेक्षण के अनुसार, 30% महिलाएं प्रतिदिन 8 घंटे से कम कार्य करती हैं, जबकि 40% महिलाएं 8 से 10 घंटे तक कार्य करती हैं। यह सबसे अधिक प्रतिशत है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिलाएं औसत से अधिक समय तक काम कर रही हैं। इसके अलावा, 30% महिलाएं प्रतिदिन 10 घंटे से अधिक कार्य करती हैं, जो अत्यधिक श्रम का संकेत देता है। यह जानकारी यह संकेत देती है कि लगभग 70% घरेलू कामगार

महिलाएं लंबे समय तक कार्यरत रहती हैं, जो उनके मानसिक, शारीरिक और पारिवारिक जीवन पर प्रभाव डाल सकता है। इस प्रकार, यह आवश्यक है कि उनके कार्य समय को नियंत्रित करने हेतु उपयुक्त श्रम नीतियों और नियमों की व्यवस्था की जाए, ताकि उन्हें उचित कार्य-संतुलन और सम्मानजनक कार्य परिस्थितियाँ मिल सकें।

4. सामाजिक सुरक्षा (ईपीएफ, बीमा, पेंशन, आदि)

अनु.क्र.	**सामाजिक सुरक्षा**	**%**
1	उपलब्ध	10%
2	उपलब्ध नहीं	90%

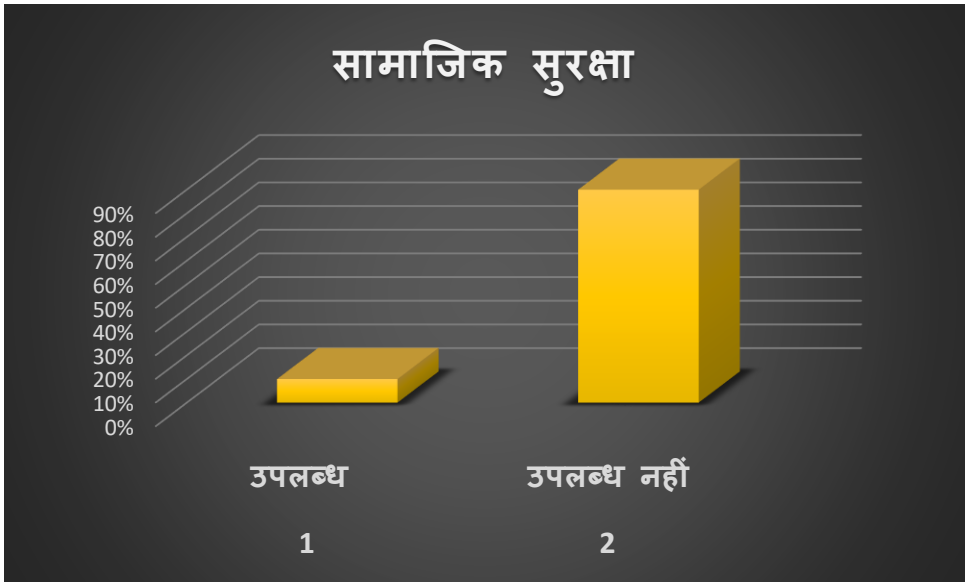

अगर इसे पाई चार्ट में दर्शाया जाए, तो 90% का हिस्सा बहुत बड़ा होगा, जो यह दर्शाएगा कि अधिकांश घरेलू कामगारों को सामाजिक सुरक्षा (EPF, बीमा, पेंशन) नहीं मिलती। सिर्फ 10% का एक छोटा हिस्सा होगा, जो यह दिखाएगा कि बहुत ही कम कामगारों को यह सुविधाएँ मिलती हैं।

5. नौकरी की स्थिरता

अनु.क्र.	नौकरी की स्थिरता	
1	स्थायी नौकरी	35%
2	अस्थायी नौकरी	65%

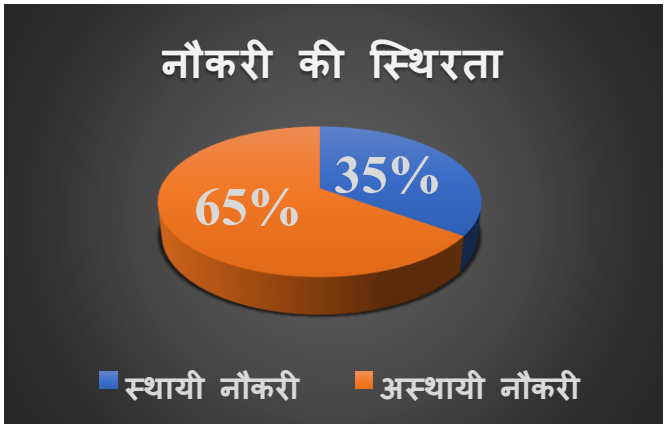

अब हम इन आंकड़ों के लिए पाई चार्ट तैयार करेंगे ताकि डेटा का बेहतर विश्लेषण किया जा सके।

दिए गए पाई चार्ट में घरेलू कामगार महिलाओं की नौकरी की स्थिरता को दर्शाया गया है। यह दो भागों में विभाजित है:

1. स्थायी नौकरी (35%) यह दर्शाता है कि 35% महिलाओं के पास स्थायी नौकरी है, जिसका मतलब है कि उन्हें नौकरी की सुरक्षा और नियमित वेतन मिलने की संभावना अधिक है।

2. अस्थायी नौकरी (65%) - यह बताता है कि 65% महिलाओं की नौकरी अस्थायी है, यानी वे अस्थिरता, कम वेतन, और रोजगार की अनिश्चितता का सामना कर रही हैं।

इस पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि घरेलू कामगार महिलाओं का बड़ा हिस्सा अस्थायी नौकरियों में कार्यरत है, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह डेटा घरेलू कामगारों की नौकरी की सुरक्षा को बेहतर बनाने की आवश्यकता को भी दर्शाता है।

7. निष्कर्ष

नागपुर शहर में घरेलू कामगार महिलाएँ अपने नियोक्ताओं के साथ विभिन्न प्रकार के संबंध अनुभव करती हैं, जिनमें कुछ सकारात्मक होते हैं, तो कुछ में शोषण और भेदभाव देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में सुधार के लिए सामाजिक और कानूनी बदलाव आवश्यक हैं। घरेलू महिला कामगारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कमजोर है। शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा और वेतन में सुधार के लिए सरकारी नीतियों और सामाजिक जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है।

भविष्य के शोध के लिए सुझाव:

1. घरेलू कामगारों के लिए कानूनी सुधारों का प्रभावी विश्लेषण।

2. नियोक्ताओं की मानसिकता को बदलने के लिए सामाजिक अभियानों का अध्ययन।

3. अन्य भारतीय शहरों में घरेलू कामगारों की स्थिति की तुलना।

4. सरकारी हस्तक्षेप: घरेलू कामगारों के लिए न्यूनतम वेतन सुनिश्चित करने के कानून बनाए जाएँ।

5. संगठन एवं यूनियन का निर्माण: कामगारों के अधिकारों की रक्षा के लिए यूनियन एवं सेल्फ हेल्प ग्रुप (SHG) बनाए जाएँ।

6. शिक्षा एवं जागरूकता: घरेलू कामगार महिलाओं के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम।

7. नियोक्ताओं की मानसिकता में परिवर्तन: सामाजिक जागरूकता अभियान चलाकर घरेलू कामगारों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार को बढ़ावा देना।

संदर्भ

1. भारत सरकार की घरेलू श्रम नीतियों पर रिपोर्ट।

2. नागपुर स्थित NGOs की घरेलू कामगारों पर रिपोर्ट।

3. विभिन्न सामाजिक शोध पत्र एवं जर्नल।

यह शोध पत्र घरेलू कामगार महिलाओं और उनके मालिकों के संबंधों को गहराई से समझने और सुधार के संभावित उपायों पर प्रकाश डालता है।